

**A Poem about  
Shahzada Firuz shah(Karim Us-Shuja)  
By an unknown poet.**

॥ श्रीरामजी ॥

कवित लीखते : समत ऊगनीसै साल चावदै के हाल  
कछु रूप गयो षायाल रोज मैली हई बादै की :  
हवै लाचार साउकार सब पुकार करै  
दोये डडै लाख जब तलप चुकी प्यादे की  
लुटी बीलोद जीरन कनगोटी हैटी भई  
खेट की सुनत है जब नीमच कै ईरादे की  
रईत लुटै है राज बनीया पीटै है  
जब हुंडीया पाते हैं फ़ोज सेख साहेजजादै की  
कवत मैटकैल फीरीया फकीर खुब गये जान  
कर गयो हेवानी सर सुप्रत मुसलानी के  
बदल्या अमान बईमान सब ईसान भै  
कीनी है कीसान मतै लगे सब ईरानी कै  
कर हीला गला पुकारै दाम मीला कु  
कलबला मचौगे प्यासै मरै अन पानी के

आगी मै जरेंगे एक रसे सै खीचीगे  
हर गज बचीगै नाय तुरक तुरकानी के  
करकै हीलागुला पुकारै दाम मोला कु  
सेलाकर लोलाकर नीसान चाले गोर कै  
छरै भुवारै भर मारै अगरैजन नै  
कटत मुकरानी इरानी उड उड कै  
कता सै सपता सीर ऊडत है बीलायतन कै  
सर सै मीटैगे गोरखाड मै कुटेगे  
जुमी मृगसर मै कटैगै दाम तुरक मन्दसोर कै ॥  
डाल तै पेट मै तेल छोरीयो के बैल जसै  
आय गयै फैल भाज मुरग नीचान कौ  
जाली बेग मोलीबेग पौलीस बबाद बैग  
खोदै घर बढुक जसे फीरै बैल घानी कै  
छोड़ दीनी हय कय कछु ऊन मानत नाय  
सची 2 कैसे बयान रंग पलीटै साल रानी कै ॥  
नमो अंक रदन गज गवरी नंद काटो सबैज दुख दंद  
फ सोवत सेंदुर अंग मुगती माल भोल पै चंद राजत  
बीसाल समत उगणासै सतरे के साल सब सुनौ सैठ  
सठी के हा